IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

मोहन राकेश के नाटको में व्यक्तित्व व कृतित्व भूमिका

दिशा
शोधार्थी
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डॉ0 ज्योति
सहायक आचार्य
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध का परिचय

राकेश का स्वभाव सहज रूप से किसी का भी दील मोह लेनेवाला था। प्रकृति–सौंदर्य के प्रेमी थे। खास करके बरसाती रातें उन्हें बहुत प्यारी लगती थी। मोहन राकेश स्वभाव से विनोदी, भावुक, संवेदनशील, संस्कारशील, अभिमानी एवं दोस्ती के नाम पर अपनी जान तक गँवाने के लिए हमेशा तैयार रहने वाले थे। लेकिन अपने दोस्तों के तीखे या दुर्व्यवहार से उन्हें बड़ा सदमा पहुँचता था।

मोहन राकेश अपने जीवन में सबसे अधिक महत्व लेखन को देते थे। वे कहते थे– "हम लेखन के बल पर क्यों नहीं जी सकते ? क्यों नहीं जी सकते ? हमारा यह हक है कि हम लिखकर इज्जत से जी सकें।"

राकेश स्वभाव से निर्मल व स्वच्छ थे। किसी को धोखा देना, कोई भी बात छिपाना, झूठ बोलना उनको अच्छा नहीं लगता था। उनका जीवन उज्जवल पहलू 'ईमानदारी' और 'लेखन' है।

हमेशा मुस्कराते रहने वाले उनके चेहरे के भीतर एक दर्द हंसता रहता था। बाहर से देखने पर राकेश का व्यक्तित्व एकदम अव्यवस्थित सा नजर आता था, लेकिन भीतर से वह उतना ही व्यवस्थित था। राकेश के व्यक्तित्व के कुछ आंतरिक पहलुओं पर अनीता जी का कथन है कि– "बाहर से राकेश जी जितने सीधे और सरल दीखते थे उतने वास्तव में थे नहीं। उन्हें अन्दर तक ठीक से समझना एक बड़ी तपस्या थी। बाहर से जितने इन्फार्मल, उतने ही ज्यादा मन से फार्मल।"

मोहन राकेश के आंतरिक व्यक्तित्व के चारों ओर एकाकीपन का कीड़ा चक्कर काटता रहता था। उससे वह अन्त तक घिरे रहे। राकेश के जीवनभर की अस्थिरता के लिए केवल उनका स्वभाव इस अकेलेपन के भूत से पीड़ित रहा। इसलिए उनके साहित्य में उनके जीवन का निचोड़हम देख सकते हैं। भावुक राकेश

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

जी अपनी 'अम्मा' की मौत को सहन न कर सके। अम्मा की मौत के तीन महीने बाद 3 दिसम्बर सन् 1972 की मनहूस शाम ने हमेशा के लिए उन्हें अपने काले दामन में छिपा लिया।

बाह्य व्यक्तित्वः

उनका बाह्य व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली था, उतना ही लिण युक्त भी था। वे एक गोरे और तेजयुक्त व्यक्ति थे। उनकी आँखों पर लगा हुआ चश्मा उनके व्यक्तित्व को एक अनोखी गरिमा प्रदान करता था। गोरा, रंग, छोटा कद, घुँघराले बाल तथा आँखों पर काला चश्मा, उम्र पचास वर्ष, कुल मिलाकर खूबसूरत नौजवान। उनकी बड़ी–बड़ी आँखों में बेगानापन दिखाई देता था। उनके प्रिय मित्र कमलेश्वर लिखते हैं "वह हँसता, तो तारों पर बैठी चिड़ियाँ पंख फड़फड़ाकर उड़ जातीं और राह चलते ऐसे चौंककर देखते, जैसे किसी को दौरा पड़ गया हो।"

राकेश केवल मन बहलाव के लिए खुद हंसते तथा दूसरों को हँसाते थे। खुशी में उदास और उदासी में खुश रहनेवाले राकेश स्वयं अपने इस स्वभाव को अच्छी तरह जानते थे। मोहन राकेश वेशभूषा में कोट, पैन्ट, टाई आदि भी वे इच्छा के अनुसार पहनते थे। अंतः व्यक्तित्व से वे स्मार्ट थे। पर बाह्य व्यक्तित्व से भी स्मार्ट बनकर रहते थे।

मोहन राकेश स्वाभिमानी और सम्मानपूर्ण जीवन जीने वाले व्यक्ति थे। अच्छी तरह से जीना तथा अपने अहं को बनाए रखना, साथ ही दूसरों के अहं को भी आँच न आने पाए, इसका भी वे ख्याल रखते थे। उनका घर किराये का था। फिर भी आधुनिकतम सभी सुविधाओं से संपन्न था। उसमें टेलीफोन, रेफ्रीजरेटर, एयरकंडीशन आदि सब कुछ था। अनेक संघर्षों का सामना करके राकेश ने यह सब बसाया था।

अच्छे कपड़े पहनना, घूमना–फिरना एवं पहाड़ों की सैर करना, बीयर पीना, सिगरेट पीना, गरीबों की जिंदगी को भीतर से देखना, दोस्तों के साथ गप्पे लड़ाना, सुबह से शाम तक काम करना, हिसाब–किताब में साफ रहना, ताश खेलना और ईमानदार रहना आदि राकेश के शौक और सिद्धांत थे।

जिन्दगी में पहले नंबर पर उनका लेखन रहा है। राकेश ने अपने लेखन के साथ कभी भी समझौता नहीं किया। राकेश अन्तिम दिनों में कीर्ति, सुविधाएँ, अधिकार, गौरव, सम्पत्ति आदि सब दृष्टियों से उन्नति के शिखर पर चढ़ रहे थे। लेकिन मौत के कालचक्र ने उन्हें अपने में समा लिया और राकेश सदा के लिए चुप हो गये।

राकेश के निधन पर भारत की प्रायः सब पत्रिकाओं ने उन पर विशेष लेख प्रकाशित किए और 'सारिका', 'एनैक्ट', 'नटरंग' आदि कई पत्रिकाओं ने तो विशेष स्मृति अंक भी निकाले। अनेक नाट्य संस्थाओं ने राकेश की स्मृति में उनके नाटक खेलकर विशिष्ट रूप से श्रद्धांजलि व्यक्त की।

प्रस्तावित शोध के सोपान

आठ–नौ साल की उम्र से ही उन्हें लेखन करने में बड़ी रुचि थी। लेखन कार्य के प्रति उत्साह राकेश को अपने पिता एवं अपने घर के वातावरण से ही मिला था। राकेश ने अपने पिता की सहायता से संस्कृत का अच्छी तरह अध्ययन किया था। वे कभी–कभी संस्कृत में गद्य–पद्य की रचना भी करते थे। तेरह साल की उम्र में ही उन्होंने संस्कृत में कविताएँ रची थीं जिन्हें देखकर उनके पिताजी बहुत खुश हुए थे। नाटक की रचना, अभिनय तथा निर्देशन की ओर रुझान भी राकेश में पहले से ही था।

सत्रह साल की उम्र में ही उन्होंने 'समझ का फेर' नामक एकांकी लिखी थी। इस एकांकी की विषय–वस्तु पिता की मृत्यु तथा उनकी दादी की अंधश्रद्धायुक्त विचारसरणी से संबंध रखती है। देश विभाजन के समय जब राकेश लाहौर में थे, तब उन्होंने 'कर्फ्यू' घोषित कर देने पर बसों का आना–जाना बन्द होने पर बस स्टाप में जमा ऐसे लोगों की मनःस्थिति का वर्णन है जो न आनेवाली बसों का इन्तजार कर रहे हैं। उन्होंने अनीता से एक बार साफ कहा था कि जीवन में पहले नंबर पर मेरे लिए मेरा लेखन है, दूसरे नंबर पर मेरे दोस्त और तीसरे नंबर पर तुम–लेकिन तीनों मेरे लिए अति आवश्यक हैं।

अभिनेता और निर्देशक बनने की इच्छा राकेश के मन में पहले से ही थी। स्कूली जीवन में राकेश अनुभव तथा हाव–भाव दूसरे छात्रों से अधिक सुंदर ढंग से

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

व्यक्त कर पाते थे। पंजाब विश्वविद्यालय में संस्कृत में एम.ए. करते वक्त राकेश ने संस्कृत नाटक 'वेणी संहार' में नारी पात्र पद्मावती की भूमिका का अभिनय किया था। इसलिए दूसरे वर्ष 1945–46 में राकेश को दो संस्कृत नाटकों का निर्देशन भी सौंपा गया था। अभिनेता और निर्देशक बनने की इच्छा से राकेश अन्त तक मुक्त नहीं हो पाये।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

मोहन राकेश ने हिंदी नाटक को एक नई दिशा प्रदान की है। कथ्य, शिल्प, भाषा और प्रयोग की दृष्टि से आधुनिक नाटकों की शुरूआत मोहन राकेश से ही मानी जाती है। आधुनिक हिन्दी नाटक की महत्वपूर्ण देन यह नाटक है। इस नाटक को तीन अंकों में विभाजित किया गया है। इस नाटक की कथा अवश्य ही ऐतिहासिक व्यक्तियों से जुड़ी हुई है। लेकिन आज के संदर्भ में आधुनिक मानव के द्वन्द्व एवं घुटन की मानसिकता को प्रकट करती है।

गौतम बुद्ध भौतिक सुखों को त्यागकर भिक्षु बन जाते हैं। राज्य का व्यवहार गौतम बुद्ध के भाई नन्द सम्भालते हैं। नन्द की पत्नी सुन्दरी रूपगर्विता है। नंद को एक ओर गौतम बुद्ध का श्रेष्ठत्व खींच रहा था तो दूसरी ओर सुन्दरी का अनुराग खींचता था। अनिश्चय की स्थिति में वह न इधर जा सकता था न उधर। इस नाटक में भी अतीत के माध्यम से समसामयिक युग के मानव की उलझन और आत्म संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. आधुनिक स्त्री–पुरुष के संबंध में उसकी मनोवृत्ति, मानसिक, संत्रास, नृशंसता तथा मानवीय संबंधों का बिखराव एवं क्षण–क्षण बदलते उनके भावों के माध्यम से राकेश ने आधुनिक समाज के प्रवंचना पीड़ित खोखलेपन को प्रकट करने का प्रयास किया गया है।
2. मोहन राकेश के नाटकों में जीवन के हर क्षण को उजागर करने का प्रयास किया गया है।
3. मोहन राकेश ने अपने नाटकों में ऐतिहासिक और आधुनिकता मूलक सामाजिक दोनों स्थितियों का रोचक चित्रण किया गया है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

4. मोहन राकेश के नाटको में स्त्री–पुरुष के जीवन की सारी समस्याओं एवं परिस्थितियों को निरूपित किया गया है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

नाटककार मोहन राकेश ने इस परिवेश को पहचाना है और इस परिवेश को निकट से देखने का अवसर उन्हें पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन से मिला है। अतः उन्होंने अपनी रचनाओं में इसे अनेक प्रयोगों और माध्यमों से प्रस्तुत किया है। इन संदर्भों की खोज करते हुए जहाँ राकेश ने अपनी कहानियों के माध्यम से आज के आदमी की एकांतिक पीड़ा, उसकी आन्तरिक अकुलाहट, भीड़ के बीच अज्ञात और निर्वासित होकर जीने की विवशता अपने स्व को सुरक्षित रखने की ललक को आत्मसात् कर व्यक्ति, घटना और परिस्थिति को एक व्यापक संदर्भ में देखा पहचाना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वनश्री त्रिपाठी, प्रेस्टिज बुक्स, दिल्ली 'थ्री प्लेज ऑफ गिरीश कारनाड'
2. ओम प्रकाश बुधोलिया, बी.आर पब्लिशिंग कारपेरेशन 'गिरीश कारनाड पोएटिक्स एण्ड एस्थेटिक्स'
3. डॉ. सुरेन्द्र यादव, तक्षशिला प्रकाशन 'नाटक रंगमंच और मोहन राकेश'
4. पी. धनवेल, प्रेस्टीज बुक्स 'द इंडियन इमेजिनेशन ऑफ गिरीश कारनाड एस्सेस ऑन हयवदन'
5. डॉ. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, जगतराम एण्ड सन्स, गाँधी नगर, दिल्ली 'नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान'
6. पूनम पाण्डेय, सुरूप बुक्स पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड द प्लेज ऑफ गिरीश कारनाड अ स्टडी इन एक्सिसस्टेंशियलिज्म'